an>

Title: Need to check increasing encroachment of western culture on Indian television channels.

डॉ. वीरेन्द्र कुमार (टीकमगढ़) : अध्यक्ष महोदया, दूरदर्शन के माध्यम से हमारे देश में जो सीरियल्स का प्रसारण हो रहा है, आज टी.वी. हर घर की पहुंच बन गया है। गरीब परिवारों, झुग्गी-झोंपड़ियों में भी टी.वी. होता है। लेकिन पश्चिमी सभ्यता के झोंके हमारी संस्कृति को झकझोर रहे हैं और पाश्चात्य सभ्यता से ओत-प्रोत सीरियल्स की संख्या काफी बढ़ गई है। उन सीरियल्स के माध्यम से जो कथानक और प्रस्तुतीकरण समाज के सामने प्रस्तुत किया जाता है, वह काफी आपत्तिजनक एवं सामाजिक ताने-बाने को बिखेरने वाला होता है। जब परिवार के सदस्य एक साथ बैठकर उन सीरियल्स को देख रहे होते हैं, वहां बच्चे, उनके मां-बाप, दादा-दादी और भाई-बहन भी होते हैं, तो कई दृश्य ऐसे आते हैं जिसमें पूरा परिवार असहजता और शर्मिंदगी का अनुभव करने लगता है। परिवार के किसी न किसी सदस्य को उठकर उस सीरियल को बदलने का कष्ट उठाना पड़ता है। मैं आपके माध्यम से सरकार से अनुरोध करना चाहता हूं कि अच्छे और सामाजिक, पारिवारिक विषयों को लेकर सीरियल्स का निर्माण करने वाले निर्माताओं को प्रोत्साहित करने की पहल सरकार द्वारा की जाए। इस तरह के जो सीरियल बनाए जाते हैं, उन्हें दूरदर्शन के माध्यम से समाज के सामने लाने से पहले निरीक्षण करने के लिए आपत्तिजनक कथानक, दृश्यों को हटाने की पहल सरकार द्वारा की जाए। धन्यवाद।

माननीय अध्यक्ष : श्री केशव प्रसाद मौर्य, श्री भैरों प्रसाद मिश्र, कुंवर पुष्पेन्द्र सिंह चंदेल, श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत, डा. सत्यपाल सिंह और श्रीमती रीती पाठक को डा.वीरेन्द्र कुमार द्वारा उठाए गए विषय के साथ संबद्ध करने की अनुमति प्रदान की जाती है।